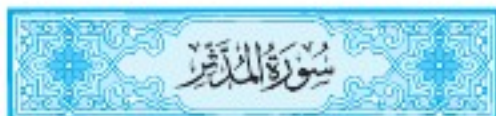


सूरह मुद्स्सिर - 74



सूरह मुद्स्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है , इस में 56 आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्स्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात् चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने^[1] वाले!

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

ثُمَّ أَنْذِرُ

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वह्नी के पश्चात् कुछ दिनों तक वह्नी नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फरिश्ता जो आप के पास 'हिरा' गुफा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहा: मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वह्नी आने लगी। (सहीह बुखारी: 4925, 4926, सहीह मुस्लिम: 161) प्रथम वह्नी से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो। وَرَبِّكَ فَكَبِّرُ
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो। وَثِيَابَكَ فَطَهِّرُ
5. और मलीनता को त्याग दो। وَالرُّجُفَ فَاهْجُرُ
6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो। وَلَا تَمْنُنْ تَسْكَرُ
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो। وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرُ
8. फिर जब फूँका जायेगा^[1] नरसिंघा में। فَإِذَا نَفَخَ فِي النُّفُورِ
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा। فَذَلِكَ يَوْمٌ مَّيْدٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ
10. काफ़िरों पर सरल न होगा। عَلَى الْكَافِرِينَ عَيْرٌ يَسِيرُ
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला। ذُرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन। وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا
13. और पुत्र उपस्थित रहने^[2] वाले। وَبَنِينَ شُهُودًا
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन। وَمَهْدًا لَهُ تَمْهِيدًا
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ। ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है। كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी^[3] चढ़ाई। سَأَرْهُقُهُ صُعُودًا

1 अर्थात प्रलय के दिन।

2 जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मुगीरा है जिस के दस पुत्र थे।

3 अर्थात कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया^[1] إِنَّهُ فَكَرَوَقَدَّرَ ۝
19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया? فَقَتَلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝
20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया? ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝
21. फिर पुनः विचार किया। ثُمَّ نَظَرَ ۝
22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा। ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝
23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया। ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝
24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है^[2] فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَاسِحْرٌ يُؤْشَرُ ۝
25. यह तो बस मनुष्य^[3] का कथन है। إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝
26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूँगा। سَاصِلِيهِ سَقَرٌ ۝
27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है। وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ۝
28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी। لَا تَبْقَى وَلَا تَذَرُ ۝
29. वह खाल झुलसा देने वाली। لَوَاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝
30. नियुक्त है उन पर उन्नीस (रक्षक फरिश्ते)। عَلَيْهَا تِسْعَةُ عَشْرَ ۝
31. और हम ने नरक के रक्षक फरिश्ते وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۝

1 कुर्आन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि बलीद पुत्र मुगीरा ने अबू जह्ल से कहा था कि लोगों में कुर्आन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

3 अर्थात् अल्लाह की वाणी नहीं है।

ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरों के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले^[1] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर^[2] कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
لِيَسْتَيَقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزِدَّ الَّذِينَ
آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وََالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا امْتَلًا
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن
يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ

32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!
33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!
34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये!
35. वास्तव में (नरक) एक^[3] बहुत बड़ी चीज़ है।
36. डराने के लिये लोगों को।

كَلَّا وَالْقَمَرِ

وَاللَّيْلِ إِذَا دُبِرَ

وَالضُّبُرِ إِذَا أَصْفَرَ

إِنَّمَا الْإِخْدَى الْكَبِيرُ

نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ

- 1 क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही संख्या बताई गई है।
- 2 जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जहल ने कहा: हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग, एक-एक फ़रिश्ते के लिये काफ़ी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे^[1]
आगे होना अथवा पीछे रहना।
38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में
बंधक है।^[2]
39. दाहिने वालों के सिवा।
40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।
41. अपराधियों से।
42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।
43. वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से।
44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।
45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों
के साथ।
46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल
के दिन (प्रलय) को।
47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।
48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफारिशियों
(अभिस्तावकों) की सिफारिश।^[3]
49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस
शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे हैं?
50. मानो वह (जंगली) गधे है बिदकाये हुये।
51. जो शिकारी से भागे हैं।

- لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۚ
- كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۖ
- إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۖ
- فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ
- عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۖ
- مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۖ
- قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۖ
- وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمُسْكِينِ ۖ
- وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۖ
- وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۖ
- حَتَّىٰ آتَانَا الْيَقِينَ ۖ
- فَمَا نَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۖ
- فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكُرَةِ مُعْرِضِينَ ۖ
- كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُسْتَنْفِرَةٌ ۖ
- فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۖ

1 अर्थात आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये, अथवा अवैज्ञा कर के पीछे रह जाये।

2 यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

3 अर्थात नबियों और फ़रिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफारिश की अनुमति दे।

52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली¹ पुस्तक दी जाये।
53. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आखिरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।
54. निश्चय यह (कुरआन) तो एक शिक्षा है।
55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।
56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَى صُحُفًا مُنشَرَّةً ۝

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۝

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۝

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

1 अर्थात् वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)